उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद।
- इक़बाल

ऑल वर्ल्ड

बोहरा जर्नल

(मासिक)

रजि: RAJH/9396 संयुक्त अंक : नवम्बर व दिसम्बर-2009 वर्ष-13 अंक-12 मूल्य 3/- रु वार्षिक 35/- रु.

जमाअत और बोहरा यूथ के मेम्बर्स की सूची

उदयपुर 25,अक्टुबर । बोहरा यूथ के बुनियादी मकसद समाजी निज़ाम को जमहूरी तर्जे अमल से चलाना और निजाम की लोगों के प्रति जवाबदेही कायम करना रहा है। इस मकसद पर न सिर्फ कोठार से लोहा लेने बल्कि खुद अमल करने की गरज से बोहरा जमाअत ने अपने 10वें आम चुनाव 18, अक्टूबर 2009 को जनाब मुश्ताक अली के. आर. वाला की कायादत में मुकम्मल हुए। साथ ही बोहरा यूथ के चुनाव जनाब याकूब अली जहीर के कायादत मुक्कमल हुए। इस चुनाव की सबसे बडी खूबी यह रही कि पहली बार 6 ख्वातीन ने जमाअत के काम की जिम्मेदारी सम्भालने की गरज से चुनाव में हिस्सा लिया जिसमें 5 बहने चुनी गयी। और बोहरा यूथ के चुनाव में डॉ जेनब आर.वी. को बोहरा यूथ का सदर मुन्तखिब किया गया।

हमारी तहरीक यकीनन बहनों के बगैर इतने लम्बे अरसे तक पूरी मजबूती से कायम नही रह सकती थी। मोईयद पुरा मस्जिद से लेकर विधान सभा तक तहरीक पर जब भी कोई आंच आयी बाहनों ने मोर्चा सम्भाल कर जीत दर्ज करवायी। हाल के चुनाव में तहरीक की जिम्मेदारी सम्भालने की गरज़ से बहने जिस तरह आगे आयी है उसने तहरीक को मजीद आधी सदी तक चलते रहने का हौसला दिया है।

बोहरा यूथ की कार्यकारिणी तैयार करने की गरज से जारी किये गये इश्तिहारात और दीगर कोशिशों की वजह से ख्वाहिशमंद कारकुन की जानिब से नामज़दगी के लिये भरे गये पर्चे के मुताबिक डाक्टर जेनब आर. वी. – सदर, – हुसैन उदयपुरी – नायब सदर, जनरल सेक्रटी– यूसुफ अली, सेक्रेटी –ईस्माइल अली दुर्गा खजांची – हातिम अली चाचूलियावाला व कार्यकारिणी के मेम्बर – शब्बीर नासिर, अनीस मियांजी, तौसीफ मण्डीवाला, हातिम अली रॉकेट, शकीला जरमन वाला, सकीना दाउद, तौसीफ टीडी वाला, शब्बीर वाघपुरा वाला, आशिक अली मगर, हैदर अली बेग वाला, अब्बास अली कुरावड़ वाला, शब्बीर हुसैन फेज़ी, सरफराज़ राज़, मोहम्मद पंसारी, अल्ताफ हुसैन खारागुरा वाला, फिरोज़ टिन वाला, हामिद अली महुवाला, मंसूर अली बाटली वाला, सरफराज़ गुमानी, शबाना मियांजी शाकिर पृथ्वीराज़ रहे।

बोहरा यूथ के मीटिंग में बोहरा यूथ के मतहत काम करने वाले इदारों के कन्वीनर मुन्तखिब किये गये जिसके मुताबिक BASE के कन्वीनर लियाकत अमर, स्टुडेंट वेलफेयर सोसायटी के कन्वीनर–शब्बीर हुसैन नासिर, बोहरा यूथ सेंटर फॉर सीनियर सिटीजन के कन्वीनर अब्बास अली मास्टर को मुन्तखिब किया गया। तहरीक को फैलाने की गरज़ से तब्लीग का काम हुसैन उदयपुरी को सौंपा गया जिसके साथ सहयोगी सदस्य अब्बास अली मास्टर रहेगें।

दाउदी बोहरा जमाअत की नयी मजलिसे आमिला के लिये नामजद किये गये कारकुन में सदर – आबिद अली अदीब, नायब सदर–फखरूद्दीन रंगवाला, डॉ इसहाक शाह, सेक्रेट्री –यूसुफ अली आर. जी. जोइन्ट सेकेट्री असगर अली मुहिब, रशीदा हकीम, ट्रेजरार–कमरूद्दीन मण्डीवाला, एकाउटेंट–मंसूर अली बाटलीवाला व कार्यकारिणी सदस्य शब्बीर हुसैन नासिर, नासिर जावेद व अनीस मियाजी रहे। लीगल कमेटी कन्वीनर – मंसूर अली कमाण्डर, स्कूल कमेटी–ले.क.सिराजुद्दीन, मेडीकल कमेटी–फखरूद्दीन रंगवाला, प्रोपरटी कमेटी–शब्बीर हुसैन पालीवाला, मस्जिद कमेटी–फिदा हुसैन पानवाला, जमाअत कमेटी–अकबर अली मण्डीवाला, अंजुमने लुकमानी–दिलावर अली कांकरोली वाला, मीडिया/तब्लीग कमेटी–अनीस मियांजी, शादी व तलाक कमेटी–अब्बास अली नाथ, लाइब्रेरी–याकूब अली ज़हीर, मेम्बरों में अब्देअली लोहावाला गुलाम अब्बास कत्था वाला सरफराज़ राज़, डॉ रिहाना बानु, हुसैन उदयपुरी, डॉ फरीदा हबीब,, मोइज़ अली मेडीवाला रेहाना जरमन वाला फरीदा मोटागाम वाला, डॉ अब्बास अलवी फिदा हुसैन पचीसा नासिर रंगवाला रज़िया सनवाड़ी ज़ोएब हुसैन हैदारी, आमंत्रित सदस्यों में लियाकत अमर, कय्यूम अली पालीवाला, आशिक अली नवानिया, हिब्तुल्लाह अत्तारी, असगर अली पलाना वाला मुश्ताक हुसैन के.आर अब्बास अली भालम ताहिर अली रंगवाला सालेह मोहम्मद नायब कैजार अली साबुन वाला कमरूद्दीन मावली वाला मंसूर अली ताज़ ।उदयपुर 28, अक्टुबर। बोहरा यूथ और दाउदी बोहरा जमाअत की नयी काबीना के हल्फ लेने की रस्म के साथ पिछले सत्र के ओहदेदारों को भाव भीनी विदाई मुकम्मल हुई इस मौके पर दाउदी बोहरा जमाअत के सबिक सेक्रेटी अब्बास अली नाथ ने नयी काबीना को मुबाराक बाद पेश करते हुए हर मुमकिन तआवुन देने का वादा दिया। साथ दउदी बोहरा जमाअत के सामने आने वाले दिनों में पैदा होने वाली दुश्वारियों से रूशनास करवाया। बोहरा यूथ के सेक्रेट्री जनाब लियाकत अमर की लम्बे कार्यकाल में आपकी उपलब्धियों पर रोशनी डाली गयी और सपसनामा पेश किया गया।

इस मौके पर बोहरा यूथ और जमाअत के सेक्रेटी यूसुफ अली ने तहरीक और जमाअत पर आने वाले दिनों में रायज होने वाली चौनोतियां के मुकाबले के लिये लोगों से अहवाान किया कि हर दुश्वारियों का डट कर मुकाबला करने के लिये पूरी तरह तैयार रहे और 1970 के दश्क की याद दिलाते हुए जब नौजवानों ने अपने केरियर की परवाह किये बगैर तहरीक में जान फूंकी सब लोगों को हर मुमकिन मदद करने को कहां।

- Cont. Next Page

रवाना हुआ 72 हाजियों का जत्था

बोहरा यूथ तथा दाऊदी बोहरा जमाअत के 72 हाजियों का जत्था 19 नवम्बर को हज एवं ज़ियारत के लिए रवाना हुआ। ये मक्का–मदीना में हज के बाद मिस्र, इराक, ईरान, सीरिया, बैतुल मुकद्दस, जॉर्डन, कुवैत तथा दुबई जाएंगे।

हाजियों को विदाई देने के लिए दाऊदी बोहरा जमात, बोहरा यूथ संस्थान तथा समाज के लोग उपस्थित थे।

Recent General Election Results

Dawoodi Bohra Jamaat (Regd.)

Abid Ali Adeeb
Anees Meeyaji
Qamruddin Mandi wala
Abde Ali Lohawala
Sarfaraz Raj
Dr Ishaq Hussain Shah
Shabbir Hussain Nasir
Abbas Ali Master
Yusuf Ali R.G
Gulam Hussain Kathawala
Dr. Rehana Banu
Rashida Hakim
Fida Hussain Bag (Pan) wala
Hussain Udaipuri
Dilawar Ali
Dr. Farida Habib
Akbar Ali Mandi
Moiz Ali Mediwala
Rehana Germenwala
Farida Motagam
Mansoor Ali Batliwala

Co-opted members

Com. Mansoor Ali Bohra
Lt. Col. Sirajuddin
Asgar Ali Muhib
Nasir Ali Rang Wala
Dr. Abbas Ali Alvi
Nasir Javed
Zoeb Hussain Haidary
Razia Sanwari
Fakhruddin Rang Wala
Shabbir Hussain Pali wala
Fida Hussain Pachisa

Cabinet members

Hon. Chairman: Abid Adeeb
Hon. Vice President: Fakhruddin Rangwala
Hon. Vice President: Dr Ishaq Shah
Hon. Secretary: Yusuf Ali R.G.
Hon. Jt Secretary: Asghar Ali Muhib
Hon. Jt Secretary: Rashida Hakim
Hon. Treasurer: Qamruddin Mandi wala
Hon. Accountant: Mansoor Ali Batliwala
Hon. Member: Anees Miyaji
Hon. Member: Nasir Javed
Hon. Member: Shabbir Hussain Nasir

Bohra Youth Association (Regd.)

Hon Gen Secy – Yusuf Ali R.G.
Hon President – Dr. Zenab Banu R.V.
Hon Secy – Ismail Ali Durga
Hon Vice President – Hussain Udaipuri
Hon Treasurer – Hatim Ali Chachuliyawala

Hon Executive Members:

Abbas Ali Master (Kurawarwala)
Altaf Hussain Kharagura wala
Anees Meeyaji
Ashiq Ali Magar
Firoz Tin wala
Haider Ali Bag wala
Hamid Ali Mahu Wala
Hatim Ali Rocket
Mansoor Ali Batliwala
Mohammad Hussain Pansari
Sakina Dawood
Sarfaraz Ali Raj
Sarfaraz Gumani
Shabana Meeyaji
Shabbir Hussain Faizy
Shabbir Hussain Nasir
Shabbir Hussain Wagpura wala
Shakila Germen wala
Shakir Hussain Pritviraj
Tauseef Hussain Mandi wala
Toseef Ali Tidi wala

बोहरा यूथ की रिहाना वार्ड 48 से पार्षद बनी

बोहरा तहरीक की बुनियाद के पहले इस जन आन्दोलन का सूत्रपात नगर परिषद के 1970 के चुनाव थे कि जब पार्षद रजा के खिलाफ विजय बनकर आयें। हाल में 39 साल बाद फिर 3 बोहरा पार्षद बनकर विजय होकर आये, जिसमे यूथ की रिहाना जर्मनवाला को यूथ वालों के साथ साथ शबाब का भी पूरा समर्थन मिला। शबाब के लोगों की यह पहल काबिलें तारीफ है। बोहरा यूथ इसकी सराहना करता है । बोहरा जर्नल बोहरा यूथ की रिहाना जर्मनवाला को दिली मुबारक बाद पेश करता है। साथ ही शबाब गुट के विजेता पार्षद मुस्लिम बन्दूक वाला और नफीसा सैफ को भी मुबारक पेश करते है।

बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में दीपावली

बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में दीपावली के शुभ अवसर पर बड़े हर्षोउल्लास के साथ छात्र छात्राओं ने रंगोली, नृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता, वरिष्ठ प्राधानाध्यापक जनाब फैय्याज हुसैन साहब थे तथा मुख्य अतिथि बोहरा यूथ के अध्यक्ष, जनाब हुसैन उदयपुरी थे। इस अवसर पर आतिशबाज़ी भी की गई। प्रधानाध्यापिका ज़ोहरा खान ने पर्व की महिमा पर प्रकाश डाला।

शाला में टैगोर हाऊस गांधी हाऊस तथा अशोका हाऊस के बीच प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ जिसमें अशोका हाऊस ने बाज़ी मारी।

JOIN

STUDENT WELFARE SOCIETY

FOR YOUR OVERALL DEVELOPMENT

Office Time : 6PM to 8PM

काश ! आज के दाई कल जैसे होते ।

मियां साहब शेख लुकमान जी साहब बिन मियां साहब दाऊद भाई 40वें दाई के माजून थे। आपका तखल्लुस जीव था। मौसमे बहार में यह ज़िक्र है कि सैयदना मोइयद आप मंदसौर से उदयपुर रवाना हुए। उन दिनों मुकासिर दावत सैयदी लुकमानजी साहब थे। लोगों को इस्लामी तालीमात से बहरावर किया और तीन दाइयों की खिदमत हासिल की और माजून का रूतबा हासिल किया। 38वें दाई सैयदना इस्माईलजी बदरूदीन, 39वें दाई सैयदना इब्राहीम वजीहुद्दीन और 40वें दाई सैयदना हिप्तुल्ला मोईयद साहब।

आप ने कई नसीहतें लिखी हैं जिन में खास तौर से हमदे रबबना और चालीस सिखामन आज भी मशहुर है। अल्लाह तआला उन्हें अजरे अज़ीम दे। हम आज भी उनकी खिदमत में खिराजे अकीदत पेश करते है।

38वें दाई सैयदना इस्माईलजी बदरूद्दीनजी साहब के ज़माने में कुछ मालदार और रईस लोग सैयदना साहब को अहमदाबाद तशरीफ लाने के लिए अर्ज़ करने गये तो आप ने फरमाया कि मैं जानता हूँ कि अहमदाबाद के मूमिनीन मुझ से बहुत मोहब्बतों खुलुस और हमदर्दी रखते हैं और जब में आऊंगा तो सब रईस और मालदार लोग मुझे ज़ियाफत के लिए बुलायेंगे, मगर गरीब लोग भी जब देखा देखी करेंगे तो यह उनके लिए मुनासिब नहीं होगा और जब मैं उनके घर ज़ियाफत के लिए नहीं जाऊंगा तो वो बुरा मानेंगे, फिर अहमदाबाद आने के लिए मेरा वक्त भी बर्बाद होगा और यहाँ पर तालिब इलमों को जो दरस देता हूँ उनमें भी खलल होगा। इसलिए बेहतर है कि मैं यही रहूँ और सब के लिए दुआ करता रहूंगा । आप सब मुझे माफ करें।

39 वें दाई सैयदना इब्राहिम वज़ीहुदीन साहब ने दुनियादारी में कभी हिस्सा नहीं लिया। उज्जैन के महाराजा ने कहलवाया मगर आप ने इन्कार कर दिया । हमेशा इबादत और यादे इलाही में मशगूल रहते। कुछ तालिबइलमों ने महाराजा को आप के यहाँ ले आये। उस वक्त इबादत में मशगुल थे और मालूम ही न रहा कि कौन आया और गया, बाद में तालिबइलमों ने बताया कि? महाराजा तशरीफ लाये थे और चले गये।

41वें दाई सैयदना अब्दुल तैयब ज़कीऊद्दीन साहब ने गुजरात मांडवी में एक ज़मीन खरीदी जो एक किसान की थी। उस पर एक पुराना घर भी था। आप ने सोचा कि इसे भी गिरा कर नये सिरे से इमारत बनाई जाये और खुदाई का काम शुरू कराया गया। चूँकि वह एक खेत था इसलिए उसका पाया की मज़बूती के लिए उसे और गहरा खुदवाया गया। खुदाई के दौरान एक खज़ाना मिला जिसमें सोने चाँदी के ज़ेवरात के अलावा 85 हज़ार अशरफिया भी निकली। यह सब तीन सौ साल पुरानी थी। आप ने उसे संभाल कर एक तरफ रख दिया और फिर मुनादी कराई कि इस ज़मीन का मालिक या कोई वारिस मौजूद हो तो वो आकर ले जाये, जब यह खबर उस ज़मीन के वारिस जो चमपानेर में रहता था, आप की खिदमत में आया तो आप ने वह सारा खज़ाना उसे लौटा दिया।

41वें दाई सैयदना अब्दुल तैयब ज़कीऊद्दीन साहब 1107 हिजरी ने मुगल बादशाह औरंगज़ैब के ज़माने में सख्त मुसीबतों का सामना किया। मूमिनीन को अहमदनगर और औरंगाबाद की जेलों में बंद कर दिया गया। आप ने उन सबको छुड़ाया और उन सब का हिसाबो किताब मौलाई खानजी पीरजी साहब के पास था। छोटी छोटी बातों का खर्च नहीं लिखा जा सका। इसलिए खानजी फीरजी साहब का सलाम बन्द कर दिया गया। तहज्जुद की नमाज़ के लिए जब उठे तो पूछा कि खानजी फीर जी कहा हैं? कहा – रात भर से यही खड़े है, उन्हें फौरन बुलाया गया। आपने कहा कि एक भी पैसा गैर वाजिब नहीं खर्च किया गया है।

आप ने दुआ की ऐ अल्लाह खानजी फीरजी को माफ कर देना और आप खुश होकर अपने घर गए।

43वें दाई सैयदना अब्देअली सैफुद्दीन साहब जो एक आलिम शख्स थे और अपनी कौम के नौजवानों को मज़हबी तालीम देने में आगे रहते थे आप ने सूरत में एक मस्जिद भी तामीर कराई थी। तपती नदी में एक ज़बरदस्त तुफान आया, जिस से हज़ारों लोगों ने अपनी जाने गंवाई, उस वक्त आप ने बढ़ चढ़ कर सब की मदद की मकानों दुकान बनाने में भी सब की मदद की।

45वें दाई सैयदना तैयब ज़ैनुद्दीन साहब ने हिज़री 1237 में सूरत में तापती नदी में तूफ़ान आया। लोग डूबने लगे, आप को मालुम हुआ तमाम मूमिनीन को लेकर खुद कश्ती में बैठ कर सब को बचाया और उनकी मदद की। खाने खिलाने और उनको फिर से बसाने में उन की मदद की।

दाई सैयदना हातिम बिन इब्राहिम के ज़माने में एक किसान और बीवी बच्चों को गेहूँ की रोटी खाने की ख़्वाहिश हुई। आप उस वक्त घोड़े के तबेले में काम कर रहे थे, उन्हें कहा कि दो घण्टे बाद सामने मकान में मिलेंगे । यूं तो वो जो खाते थे, मगर बेतुलमाल में चूंकी गेहूँ है, इसलिए गाड़ी भर कर खाना कर दिया।

इन सब दाइयों की तारीख में आज के दाइयों की तस्वीर देखी जा सकती है।

काश ! आज के दाई कल के दाइयों जैसे होते ।

हुसैन उदयपुरी

अजब कमरूद्दीन मण्डीवाला का सम्मान

उदयपुर के दाऊदी बोहरा सुधारवादी आन्दोलन से जुड़े लगभग सभी लोग शिक्षित है। इनमें ना सिर्फ मर्द बल्कि औरतें भी अच्छा मुकाम रखती है।

इसी का नतीजा है कि भारत विकास परिषद द्वारा उदयपुर में आयोजित एक सम्मान समारोह में बोहरा यूथ की सक्रिय ख्वातीन अजब कमरूद्दीन मण्डीवाला को सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका एवं विज्ञान में उत्कृष्ट अध्यापन कार्य के लिए परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री एस.के. वर्मा द्वारा शाल ओढ़ा कर एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।मोहतरिमा

अजब बानू उदयपुर के विद्याभवन स्कूल में लगभग 31 वर्षों से बतौर सीनियर अध्यापिका के पद पर कार्यरत है।

बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी
उदयपुर (राज.)
Phone No. 0294-2424886

DR. ISHAQ HUSSAIN SHAH (M.B.B.S., M.S.)
वरिष्ठ सर्जन (जनरल सर्जरी इन्चार्ज)
रोज़ सुबह 9.00 से 12.30 बजे एवं शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. REHANA BANU (M.B.B.S., M.S.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ (GYNAE & OBST.)
रोज़ सुबह 8.30 से 12.00 बजे तक

DR. KULSUM SHAH (M.B.B.S., M.S.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ (GYNAE & OBST.)
रोज़ शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. FATIMA SIRAJ (M.B.B.S., D.G.O)
स्त्री रोग विशेषज्ञ (GYNAE & OBST.)
रोज़ दोपहर 12.00 से 1.00 बजे तक

DR. CHANDRA CHAPLOT (M.B.B.S. M.S.)
इ. एन. टी. विशेषज्ञ
सुबह 8.30 से 9.30 बजे तक

DR. Asfaq Hussain (M.B.B.S. M.S.)
वरिष्ठ सर्जन (जनरल सर्जरी इन्चार्ज)
रोज़ सुबह 9.00 से 12.30 बजे एवं शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

हमारे यहां सोनोग्राफी, खून, पेशाब और सभी तरह की जांचे न्यूनतम लागत मे की जाती है।
प्राथमिक उपचार हेतु दवाईयाँ मुफ्त प्रदान की जाती है।
खतना की सुविधा उपलब्ध है।

Best Compliments From :
खॉंजीपीर मेमोरियल ट्रस्ट, उदयपुर

अपने इदारों की मज़बूती और ज़रूरत मन्दों की मदद के लिये ट्रस्ट फण्ड में चंदा देकर सवाब हासिल करें।

सम्पर्क : आबिद हुसैन अदीब (मैनेजिंग ट्रस्टी)

Letter to the Editor :

आप अपने तअस्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001, E-mail : journal@dawoodi-bohras.com

Expert Speak

Every month we bring you a regular column on management studies by a management expert in the hope that it benefits our young readers.

The Balanced Scorecard - Measures That Drive Performance - II

Continued from last month

Customer Perspective

How Do Customers See Us?

Many companies today have a corporate mission that focuses on the customer. "To be number one in delivering value to customers" is a typical mission statement. How a company is performing from its customers' perspective has become, therefore, a priority for top management. The balanced scorecard demands that managers translate their general mission statement on customer service into specific measures that reflect the factors that really matter to customers.

Customers' concerns tend to fall into four categories: time, quality, performance and service, and cost. Lead time measures the time required for the company to meet its customers' needs. For existing products, lead time can be measured from the time the company receives an order to (the time it actually delivers the product or service to the customer. For new products, lead time represents the time to market, or how long it takes to bring a new product from the product definition stage to the start of shipments.

Quality measures the defect level of incoming products as perceived and measured by the customer. Quality could also measure on-time delivery, the accuracy of the company's delivery forecasts. The combination of performance and service measures how the company's products or services contribute to creating value for its customers.

To put the balanced scorecard to work, companies should articulate goals for time, quality, and performance and service and then translate these goals into specific measures.

Depending on customers' evaluations to define some of a company's performance measures forces that company to view its performance through customers' eyes. Some companies hire third parties to perform anonymous customer surveys, resulting in a customer-driven report card. Benchmarking procedures are yet another technique companies use to compare their performance against competitors' best practice. Many companies have introduced "best of breed" comparison programs: the company looks to one industry to find, say, the best distribution system, to another industry for the lowest cost payroll process, and then forms a composite of those best practices to set objectives for its own performance.

In addition to measures of time, quality, and performance and service, companies must remain sensitive to the cost of their products. The balanced scorecard puts strategy – not control- at the centre. Probably because traditional measurement systems have sprung from the finance function, the systems have a control bias. That is traditional performance measurement systems specify the particular actions they want employees to take and then measure to see whether the employees have in fact taken those actions. In that way, the systems try to control behaviour. Such measurement systems fit with the engineering mentality of the Industrial Age. The balanced scorecard, on the other hand, is well suited to the kind of organization many companies are trying to become.

The scorecard puts strategy and vision, not control, at the centre. It establishes goals but assumes that people will adopt whatever behaviours and take whatever actions are necessary to arrive at those goals. The measures are designed to pull people toward the overall vision. Senior managers may know what the end result should be, but they cannot tell employees exactly how to achieve that result, if only because the conditions in which employees operate are constantly changing.

This new approach to performance measurement is consistent with the initiatives under way in many companies: cross-functional integration, customer supplier partnerships, global scale, continuous improvement and team rather than individual accountability.

By combining the financial, customer, intemal process and innovation and organizational learning perspectives, the balanced scorecard helps managers understand, at least implicitly, many inter-relationships. This understanding can help managers transcend traditional notions about functional barriers and ultimately lead to improved decision making and problem solving. The balanced scorecard keeps companies looking- and moving-forward instead of backward.

- Robert S. Kaplan/David P. Norton

Robert S. Kaplan is the Arthur Lowes Dickinson Professor of Accounting at the Harvard Business School. David P. Norton is president of Nolan, Norton & Company, Inc., a Massachusetts-based information technology consulting firm he co founded.
(Material provided by Dr Kaneez Fatima)

Role of body language in personality development

Welcome to a session of body language — a cluster of physical movements and gestures that convey all forms of emotions. Our current moods or emotions are often reflected in posture, position and movement of our bodies. Such non-verbal cues are usually termed body language.

Body language is an important part of communication which can constitute 50% or more of what we are communicating. If you wish to communicate well, then it makes sense to understand how you can (and cannot) use your body to say what you mean.

You must have an effective body language to improve your personality. It includes your gesture, facial expression, how you sit and walk and how you treat others. So develop your body language which helps you to portray yourself in a better way.

POSTURE

Posture is an essential part of non-verbal communication. The way you walk, sit and stand is very much important. If you sit in a slouched position for an important meeting, it shows lack of interest. Keeping this kind of posture is a black mark on your personality.

POSITION OF YOUR HEAD

If you like to feel more confident and smart, keep your head level — both horizontally and vertically. If you want to be friendly and in a listening mode, shake or nod your head. Keep your head position straight when you want to be authoritative.

HAND SHAKE

This is one of the best determinants of a person's body language and his or her overall personality. If a person has a firm hand shake, it gives an impression that the person is trustworthy and is confident about him or herself. Whereas loose and quick hands shake is a strong indicator of a lack of confidence.

FACIAL EXPRESSION

Keep always a smile on your face while you approach others, it brings more strength to the relation. Of course you can spread this smile to others like a flower spreads its fragrance all around. Keep smiling, it adds charm and confidence to your personality.

- Rukhsana Saifee

---

1. क्या आप अपने इदारों को जानते हैं ?
2. क्या आप इन इदारों के लिए काम करते हैं ?
3. क्या इन इदारों को आपका तआवुन हासिल हैं ?
4. क्या आप इन इदारों को मुस्तहकम और मज़बूती देने के लिए सोचते हैं ?
5. इन तमाम इदारों को मज़बुत कीजिए ताकि आप की जमाअत व तहरीक मज़बूत हो, आप की कौम मज़बूत हो।

हुसैन उदयपुरी

दाऊदी बोहरा जमाअत (रजि.) 342/

1. दाऊदी बोहरा जमाअत की 9 कमेटियॉं
2 बोहरा यूथ पब्लिक सीनियर सेकण्डरी स्कूल हिन्दी सेक्शन, उदयपुर
3 बोहरा यूथ पब्लिक सीनियर सेकण्डरी स्कूल अंग्रेजी सेक्शन, उदयपुर
4 बोहरा यूथ मेडिकल रीलीफ सोसाईटी, रजि. 237/2002–03
5 बोहरा यूथ मेडिकेयर सेन्टर
6 बोहरा यूथ मेडीकल ट्रस्ट
7 अन्जुमने लुकमानी
8 अन्जुमने फिदायने हुसैन
9 अन्जुमने ज़किराने हुसैन
10 दारूल मुतालिआतुल बुरहानिया, रजि. 5069 दिनांक 14–7–1942
11 स्कूल ऑफ दीनी तालीम
12 खॉन्जीपीर चेरिटेबल ट्रस्ट
13 अलमदार हेल्पिंग सोसायटी
14 सुगराबाई ऐजुकेशनल ट्रस्ट
15 दाऊदी बोहरा वेलफेयर सोसाईटी रजि. 42/1988–89
16 उदयपुर अरबन को–ओपरेटिव बैंक लि., 11 ब्रॉन्चेस

बोहरा यूथ संस्थान (रजि.) 22/2004–05

1 बोहरा यूथ संस्थान
2 बोहरा यूथ गर्ल्स विंग
3 स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसाइटी
4 बैस क्रिकेट एकादमी
5 आल वर्ल्ड बोहरा जर्नल रजि. राज/एच./9396
6 बोहरा यूथ सीनियर सिटीज़न सोसायटी
7 हुसैनी मैरिज ब्यूरौ

THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.

Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans
We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch Ph: 0294 2422461 M: 9928790762	Dhan Mandi Branch Ph: 0294 2422355 M: 9828162044	Bada Bazar Branch Ph: 0294 2420429 M: 9414738065	
Fatehpura Branch Ph: 0294 2450762 M: 9828195535	Madhuvan Branch Ph: 02942423542 M: 9460402651	Hiran Magri Branch Ph: 0294 2460893 M: 9414786877	Krsihi Mandi Branch M: 946030453
Rajsamand Branch Ph: 95 2952 224022 M: 9001055034	Salumber Branch Ph: 95 2906 231250 M: 979903464	Fateh Nagar Branch Ph: 95 2955 220316 M: 9001055034	

Karbala - A battle lost, a revolution won

In this article, Saifuddin Insaf presents a unique comparison between the battle of Karbala and the present day scenario among the Dawoodi Bohras

What was unique about the battle of Karbala?

Unlike the founder of Islam Hazrat Mohammed (PBUH), Imam Husain (A.S.) was not confronting non-Muslims. The killers of Imam Husain and other martyrs of Karbala were Muslims… the same Muslims who had joined Imam Husain for prayers and stood behind him as he led it. It is most shocking and horrifying that the lust for personal interests, trivial worldly gains and power did not deter the very same Muslims from carrying out the most shameful and atrocious orders of a tyrant ruler to cut off his head and trample his body, leaving it unburied on the desert sand.

Who can understand this situation better than we, Dawoodi Bohras. We Dawoodi Bohras are known to be peace-loving, kind-hearted and home- and family-oriented. But the same Bohras, when instigated by their powerful priests against their own family members, friends and co-religionists, become the worst kind of barbarians and enjoy torturing them.

Who were with Imam Husain in the battle of Karbala?

In the battle of Karbala with Imam Husain were only a precious few — a handful of his family members, friends and supporters. These included young and old and even children. This was the situation when millions of people the world over were converted to Islam and had faith in the Prophet of Islam. Is it not surprising that these millions of Muslims were unaware of the sufferings of the members of house of their Prophet in Karbala? Again, this handful of people with Imam had to face a well-equipped and large army of the tyrant ruler, Yazid.

Imam Husain had less than a hundred of his supporters and they were opposing an army of more than 40,000! Does it mean that one who has a large following is right and one who has just a few supporters is wrong? This is an important question for Dawoodi Bohras who think that just because the majority of Bohras are not supporting the reform movement therefore the reformist Bohras are wrong. The Bohras are all silent suffers of tyranny but the majority remain a silent spectator even when witnessing a small minority fighting against evil.

Why was Imam against Yazid, the ruler of a vast Muslim state?

Yazid's father Muawiyah deviated from the democratic tradition by directly appointing his son Yazid, the ruler of an Islamic state. By this act Muawiyah also committed a beach of treaty with Imam Hasan by going against the condition that after Muawiyah the next ruler would be as per the people's consent. Making his son his successor turned a revolutionary mission in to a hierarchy.

Yazid was born and brought up in the luxuries of palaces with slaves and servants always by his side with folded hands to serve him. Hunting and killing were his favourite pasttime. He was a drunkard and a flirt and power hungry. He was misusing the public treasury (baitul-mal) for his personal lavish lifestyle. He wanted to rule with a heavy hand and was therefore, pressuring his subjects for unconditional surrender. Therefore, he forced Imam Husain to give him oath of allegiance (Baiat or Misaq) and when the Imam refused to do so, he got him killed and did not spare even the Imam's supporters. He also terrorized the Muslim umma by asking his army to carry the heads of the martyrs of Karbala through each and every street of Kufa and all the way up to Damascus in Syria.

Do we, Dawoodi Bohras not find a parallel of this event in the recent history of our community?

Did Imam Husain lose the battle of Karbala?

Imam Husain was humiliated and brutally massacred along with his supporters after putting them through great hardship. After their death their bodies were not buried but trampled upon. The women of his house and other survivors were looted, insulted and dishonoured, tortured and made homeless.

Can anyone thus say that Imam Husain lost the battle? No, Imam Husain may have lost in a sense but with his steadfastness for a noble cause and his great sacrifice he definitely won a revolution.

The Bohra reform movement, which is fighting all odds, is time and again considered by some as having failed. Reformists are humiliated, beaten, even killed and burials of their dead are refused. Even their bodies are dishonoured. But they continue to remain committed and to fight against the prevailing injustice and tyranny. It is a revolution which is going to succeed. Inshall Allah!

नया साल हिजरी सन् 1431 और ई. सन् 2010 के आगमन पर
ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल, बोहरा यूथ और दाऊदी बोहरा जमाअत आप सभी हजरात को दिली मुबारकबाद पेश करते है।

हज़रत इमाम अ़ली ज़ैनिल आ़बिदीन (अ.स.)

हज़रत इमाम अ़ली ज़ैनिल आ़बिदीन (अ.स.) के स्वानह ऊ़मरी पर एक मुख़्तसिर नज़र

पैदाइश (जन्म) – माहे शाबान की पाँच (5) तारीख़ सन् 33 हिजरी मदीना मुनव्वरा में आप पैदा हुए। उसमानबिन अ़फ्फान के ज़माने में। अ़ली इब्ने अबूतालीब के हमनाम आपका नाम अ़ली रखा। आपके वालिद हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) और माँ हज़रत बानू (अ.स.) है। अ़ली मुश्किलकुशा की शहादत तक आपकी उमर शरीफ 8 (आठ) बरस, इमाम हसन (अ.स.) की शहादत के रोज़ तक 17 साल, और इमाम हुसैन (अ.स.) की शहादत के वक्त आप 28 बरस के थे। कहीं 23 साल बताई गई है।

ज़ोजा (बीबी) – आपके चचा इमाम हसन (अ.स.) की साहबज़ादी फातिमा (अ.स.) थी। जो बाद में आने वाले तमाम इमामों की माँ कहलाने लगी। इमाम हसन (अ.स.) तमाम इमामों के नाना और हुसैन (अ.स.) दादा हुए। और अ़ली इब्ने अबितालिब परदादा और परनाना हुए और फातिमा ज़ेहरा (अ.स.) परदादी और परनानी हुई।

औलाद (फरज़न्द) – आपके सोलह (16) फरज़न्द हुए। इसमें सात (7) बेटियाँ और नौ (9) बेटे थे।

बेटे – 1. इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ.स.) 2. ज़ैद 3 अब्दुल्लाहिल्बाहिर 4. अ़बदुल्लाह 5. हसन 6 हसनूल्असग़र 7. अ़ली अकबर 8. अ़ली असग़र 9. उमर अशरफ । बेटियों के नाम नहीं मिले।

कुनियत – आपकी कुनियत अबुल हसन और अबु मोहम्मद हैं।

लक़ब – आपका लक़ब सय्यदिस्साजिदीन, बुकाअ़, मुजतहिद, जुल सफानात और ज़ैनिलआ़बिदीन हैं। अ़ली (अ.स.) इब्ने हुसैन (अ.स.) को ज़ैनिल आ़बिदीन का लक़ब शैतान इब्लीस (ल0) ने दिया। वाकि़या यूँ था कि एक रात अ़ली (अ.स.) इबादत में मशहूल ( ) थे, कि आपके सामने कौन खड़ा है, बिल्कुल मालूम न था। शैतान का मक़सद अ़ली की इबादत में ख़लल डालना था। मगर माशूक़े इलाही कब अपने आशिक़ की याद से ग़ाफिल रहते। मजबूरन शैतान काटने पर आमादा हुआ। दो चार बार तकलीफ देने से लाचार हुआ। और कोई चारा न बन सका। तब तक अ़ली (अ.स.) इबादते इलाही से फुर्सत हासिल की। कतब ख़ुदा ने आप पर इल्हाम फरमाया, और फरमाया कि यह सौबान नहीं है, बल्कि सौबान की सूरत में शैतान है। उस वक्त आपने लईन को एक ज़ोरदार तमाचा मारा, जिससे वह काफी दूर जाकर गिरा। फिर उठ कर बआवाज़ बुलन्द पुकारने लगा कि ए अ़ली (अ.स.) आप हक़्क़न हक्क़ा ज़ैनिल आ़बिदीन है। इसलिये आप तब से अ़ली ज़ैनिल आबिदीन से मशहूर हुए। (ज़ैनिल आ़बिदीन का मतलब इबादत की ज़ीनत)। यज़ीद लईन अ़ली ज़ैनिल आबिदीन के ज़माने में हलाक हुआ। इसकी ज़ाहिरी ख़िलाफत सिर्फ 3 साल तक रही। इसी ज़माने में वाकि़आते करबला गुज़रा।

वफात – इमाम अ़ली ज़ैनिल आबिदीन वलीद (ल.) बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान (ल.) के ज़माने में ज़हर से शहीद हुए सन् 74 हि0 में मदीना में। आपकी कब्र मुबारक जन्नतुल बक़ीअ में इमाम हसन (अ.स.) के पास है। आप इमामत के रूत्बे पर फाईज़ 33 बरस 9 महीने और 15 दिन तक रहे।

फख़रूद्दीन आर.वी.

We celebrate womanhood at every turn and corner of our life. But it is not very often that we acknowledge the role of Islam in the strength displayed by Muslim women when dealing with all and sundry. Islam is a religion that empowers women to live a life of dignity and this is evident in our reformist women who have dared all in their march to freedom. Here are some examples of global valor, courtesy Muslim Women's Newsletter.

Muslim woman wins alimony battle

A legal wrangle that lasted for 12 years has finally worked out in favour of Salma, a divorced woman who sought alimony from her ex-husband by instituting her case under the rarely used Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 — a statute that was enacted in the wake of the SC judgement in the Shah Bano case.

Several lawyers told her to move her petition under the provision of Code of Criminal Procedure (Cr PC) - a widely-used law for seeking maintenance. Salma, however, had faith in the specific law that, like in any other religion, obligated a husband to make fair provisions for the future of his divorced wife and minor child. Her belief in the law has finally been upheld with a Delhi court, in a rare order, directing her former husband Rahim to pay her Rs.9 lakh in maintenance along with money worth 20 tolas of gold. Metropolitan Magistrate Twinkle Wadhwa held that it was the duty of a Muslim man to pay maintenance to his divorced wife.

12-year-old Yemeni bride dies after 3 days in labor

A 12-year-old Yemeni child-bride died after struggling for three days in labour to give birth, a local human rights organisation said.

Fawziya Abdullah Youssef died of severe bleeding while giving birth to a stillborn in the al-Zahra district hospital of Hodeida province, 223 kilometres west of the capital San'a.

Child marriages are widespread in Yemen, the Arab world's poorest country, where tribal customs dominate society. More than a quarter of the country's females marry before age 15, according to a recent report by the social affairs ministry.

Youssef was only 11 when her father married her to a 24-year-old man who works as a farmer in Saudi Arabia, Ahmed al-Quraishi, chairman of Siyaj human rights organisation, said on Saturday.

- Ahmed Al-H

Malay clears token caning of Muslim model

A Muslim woman sentenced to caning for drinking beer wants to get the punishment over with now that it has been confirmed by an Islamic appeals court judge, her father said. If the punishment is carried out, Kartika Sari Dewi Shukarno, a 32-year-old mother of two, would become the first Muslim woman to be caned in Malaysia, where about 60 percent of the 28 million people are Muslims.

The case has ignited a debate in this moderate Muslim-majority country whether conservative Islamists, who advocate harsh punishments, are gaining influence over the justice system and whether Islamic laws should intrude into people's private lives.

Kartika, a former model and nurse, was sentenced in July to six strokes of the cane and a fine of 5,000 ringgit ($1,400) for drinking beer in December 2007 at a beach resort in violation of Islamic laws. Islam prohibits Muslims from drinking alcohol.

Kartika, who pleaded guilty, refused to appeal her sentence and was on the verge of being caned on Aug. 24. But the punishment was halted at the last minute following uproar in the media and among rights activists.

Only three states in Malaysia—Pahang, Perlis and Kelantan - impose caning for drinking alcohol. In the other 10 states it is punishable by a fine.

Girl who killed militant fears for her family

Three days after she shot dead a Lashkar-e-Taiba terrorist after snatching his gun, Rukhsana, an 18-year-old Muslim girl now fears for her family's safety.

Rukhsana's family has been shifted to Rajouri for safety.

Amid reports that LeT terrorists were about to seek revenge for the killing of their commander Abu Osama, who was shot by Rukhsana Sunday night, the Gujjar girl said she is "worried about the safety" of her family.

The militants, she told reporters in Rajouri, would seek revenge for the killing of their commander.

"I hope that the state government would take measures to provide us safety," she said.

Superintendent of Police (Rajouri) Shafakat Watali said the police would provide protective cover to Rukhsana's family.

Rukhsana hit the headlines across the country after police claimed that she along with her brother and other family members killed a dreaded Lashkar commander when he barged in their house along with his two associates.

The family of Rukhsana and her close relatives shifted from the village to Rajouri town where district administration made arrangements for their temporary stay at Dak Bungalow.

Courtesy: IANS

Egypt's top cleric to ban veils in schools

Egypt's highest Muslim authority said he plans to bar female students who wear face veils from entering the schools of al-Azhar, Sunni Islam's premier institute of learning, according to local reports. Mohammed Sayyed Tantawi, Sheik of al-Azhar, made his plans public during a weekend visit to a Cairo school, where he told a middle school student to take off her niqab, according to the independent daily Al-Masry Al-Youm.

The niqab, a face-veil with a thin opening for the eyes, "has nothing to do with Islam and is only a custom," Tantawi is quoted as saying.

A security official also told The Associated Press that police have standing verbal orders to prohibit girls covered head to toe from entering al-Azhar's institutions, which include middle schools, high schools and several universities.

Sudan 'indecent pants' woman spared lashing

For Lubna Ahmed al-Hussein a pair of pants has become a political statement. In July she and four dozen other women were arrested for wearing pants that Sudan's authorities declared were 'indecent'. The women were all part of a public protest against the law, which they say is enforced arbitrarily - women often wear trousers in Sudan, yet they can be punished if some official decides the pants show too much of the woman's 'shape', and the punishment can be up to 40 lashes from a whip.

Hussein works as a press officer for the United Nations in Sudan's capital, Khartoum, so technically she is regarded as a diplomat by the Sudanese government. But as part of her challenge against the lash law, Hussein waived her diplomatic immunity.

Her case rather quickly became an international rights embarrassment for Sudan. The government thought it had found a face-saving way out of the legal mess they'd created - the court in Khartoum decided instead to fine Hussein 500 Sudanese pounds (about $200) and spare the lash. But Hussein isn't letting this rest, now she's refusing to pay the fine, saying that she would prefer to go to prison - of face the 10 lashes that was her original sentence - in order to keep the world's attention focused on Sudan's discriminatory dress code. About 100 supporters - mostly women - gathered outside the courthouse, chanting "no to whipping!"

Extremists in Saudi Arabia set fire to culture club to prevent woman poet's public appearance

A culture war has been raging recently in Saudi Arabia's Al-Jouf province over a poetry reading with liberal woman poet and columnist Halima Muzaffar. After the province's culture club announced its intention to hold the event, unknown individuals threatened its managers, demanding that all cultural events featuring women be cancelled. Later, they set fire to the club, forcing the managers to postpone the reading. When the event finally did take place, Islamist extremists disrupted it and made further threats against the organizers.

Following these incidents, Halima Muzaffar herself wrote in the Saudi daily Al-Watan: "My colleagues and I never imagined that [someone would] set fire to a venue of cultural activity in order to prevent us from giving a poetry reading… I never imagined that my articles, reflecting my opinions - which the extremists accusingly characterize as Westernized and secular - would one day cause the club manager, Ibrahim Al-Humayed, and his colleagues to receive threatening phone calls aimed at preventing me from appearing [at the club].

Also in Al-Watan, Saudi columnist Muhammad Hassan 'Alwan condemned the Saudi clerics for remaining silent in the face of the attempts to paralyze cultural activity in the country: "It is only natural that we urge the clerics to play a greater role [in combating this ideology] - considering their immense popularity [among the public] and their power to reduce the phenomenon. [This can be done] via an organized campaign that will give religious guidance and explain that cultural events sanctioned by the governor must not be sabotaged - even if they include what the Islamist stream considers 'shari'a violations.'

सिंहल सुन लें: भारत दारूल अमन है

– डॉ. असगर अली इंजीनियर

मध्यकाल में मुस्लिम उलेमा ने दुनिया को दो हिस्सों में बाँटा था– दारूल इस्लाम और दारूल हर्ब। दारूल इस्लाम, अर्थात इस्लाम का घर और दाहर्ब यानि युद्ध का घर। उन दिनों प्रजातंत्र नहीं था और पूरी दुनिया में बादशाहों और निरंकुश राजाओं– नवाबों का शासन था। देश के रहवासी, उस देश के नागरिक नहीं, वहाँ के राजा की प्रजा समझे जाते थे। ऐसे समय, जिन क्षेत्रों में रूल मुस्लिम बादशाह और सुल्तान राज करते थे, उन्हें दारूल इस्लाम का नाम दिया गया और जहाँ गैर–मुसलमान राज करते थे, उन्हें दारूल हर्ब का।

हमें यह याद रखना होगा कि यह विभाजन न तो कुरआन ने किया और न ही पैगम्बर ने। यह विभाजन तो उलेमा ने किया था। कुरआन ने दुनिया के लोगो को तीन भागों में बाँटा – मुसलमान (जिन्हें अहले किताब कहा गया), काफिर और मुश्रिक (कई भगवानों को मानने वाले)। अहले किताब वे थे जिनके पास रास्ता दिखाने के लिए पवित्र किताब थी। काफिर और मुश्रिक वे थे, जिनके पथ प्रदर्शन के लिए न तो कोई किताब थी और न जो किसी औपचारिक धर्म में विश्वास रखते थे। कुरआन और पैंगम्बर ने दुनिया को दारूल इस्लाम और दारूल हर्ब में नहीं बांटा।

विहिप के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल ने यह मांग की है कि भारतीय मुसलमानों को भारत को दारूल अमन (शाँति का घर) घोषित करना चाहिए। श्री सिंहल की अज्ञानता सचमुच खेदजनक है। उन्हें शायद यह मालूम नहीं है कि भारतीय मुसलमानों ने कभी भी भारत को दारूल हर्ब नहीं माना। केवल ब्रिटिश शासन के दौरान थोड़े समय के लिए भारत को दारूल हर्ब घोषित किया गया था और इस मुद्दे पर भी उलेमा और मुस्लिम नेताओं में मतभेद थे।

जाने–माने आलिम शाह वलीउल्लाह के पुत्र शाह अब्दुल अज़ीज जो स्वंय आलिम थे– ने ब्रिटिश शासन के दौरान भारत को दारूल अमन घोषित किया था और यह फतवा जारी किया था कि मुसलमान ब्रिटिश सेना में शामिल हो सकते हैं। सर सैय्यद अहमद खान और उनके समर्थकों ने भी भारत को कभी दारूल हर्ब नहीं माना। चूंकि इस्लाम में चर्च की तरह कोई औपचारिक धार्मिक संगठन नहीं है, इसलिए उलेमा अपने अलग–अलग विचार रखने के लिए स्वंतत्र है।

भारत को कभी दारूल हर्ब का दर्जा नहीं दिया गया। केवल खिलाफत आंदोलन के दौरान देवबंद के उलेमा ने भारत को दारूल हर्ब घोषित किया था। उस दौर में बड़ी संख्या में मुसलमानों ने अफगानिस्तान को अपना अस्थायी घर बना लिया था। अफगानिस्तान में राजा महेन्द्र प्रताप के नेतृत्व में निर्वासित सरकार बनाई गई थी, जिसके प्रधानमंत्री मौलाना औबेदुल्लाह सिंघी थे। उस समय भारत को दारूल हर्ब घोषित किया गया था और मुसलमानों से यह आव्हान किया गया था कि वे दारूल इस्लाम (अर्थात अफगानिस्तान, जहाँ मुस्लिम राजा का शासन था), में जाएं, रहें और वहाँ से ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जेहाद करें।

यह अपरिपक्व योजना थी और इसका बहुत बुरा हर्ष हुआ। ब्रिटिश सरकार के दबाव में अफगानिस्तान के राजा ने भारतीय मुसलमानों को अपने देश से खदेड़ दिया। मध्य एशिया की ओर भाग रहे हजारों मुसलमान मारे गए। इस छोटे से दौर के अलावा भारत को कभी दारूल हर्ब घोषित नहीं किया गया।

हमें यह भी समझना होगा कि यह विभाजन मध्यकाल में उलेमा द्वारा किया गया था और यह आधुनिक प्रजातंत्रों पर लागू नहीं होता। बुश प्रशासन के दौरान अमेरिका ने दो मुस्लिम देशों पर हमला किया फिर भी अमेरिका को किसी उलेमा ने दारूल हर्ब घोषित नहीं किया। यह सही है कि अमेरिका, अरब इजराइल विवाद में इजराइल का साथ देता है, परन्तु यह भी सच है कि अमेरिका अपने मुस्लिम नागरिकों को अन्य नागरिकों के बराबर दर्जा देता है और उनके राजनैतिक और धार्मिक अधिकारों की रक्षा करता है।

यह विभाजन तो मध्यकालीन उलेमा द्वारा किए गए थे और जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, आधुनिक प्रजातंत्रों पर लागू नहीं होते। भारत तो छोड़िए, दुनिया के किसी भी देश को दारूल हर्ब का दर्जा नहीं दिया जा सकता। इजराइल को भी नहीं क्योंकि इजराईल भी अपने अरब और फिलिस्तीनी रहवासियों को नागरिक का दर्जा और अधिकार देता है। श्री सिंहल को इस तरह की बेहूदा माँग करने के पहले कम से कम तथ्यों की ठीक से जाँच पड़ताल तो कर लेनी चाहिए थी।

श्री सिंहल ने यह माँग भी की है कि मुसलमानों को यह घोषित करना चाहिए कि हिन्दू काफिर नहीं हैं। अगर श्री सिंहल भारत के मुस्लिम साहित्य का ध्यानपूर्वक अध्ययन करेंगे तो उन्हें पता चलेगा कि दारा शिकोह, मजहर जानी जाना और कई अन्य सूफी संत हिन्दुओं को 'अहले किताब' (अर्थात, पवित्र पुस्तक द्वारा बताए गए रास्ते पर चलने वाला) मानते थे। यही दर्जा यहूदियों और ईसाइयों को भी दिया गया है।

इस सिलसिले में मजहर जानी जानां द्वारा लिखे गए एक पत्र में कही गई कुछ बातें दिलचस्प हैं। यह पत्र जानां ने अपने एक शिष्य को लिखा था जो यह जानना चाहता था कि क्या हिन्दुओं को काफिर करार दिया जा सकता है।

मजहर जानी जानां कहते हैं कि काफिर वे होते हैं जो सच को छुपाते हैं जबकि हिन्दुओं के पास तो वेद जैस ग्रंथ हैं जिनमें अल्लाह द्वारा प्रकट किया गया सत्य है। वे यह भी कहते हैं कि हिन्दू 'तवाहिद' (एक ही ईश्वर) में विश्वास करते हैं। हिन्दुओं का ईश्वर निर्गुण (बिना कोई पहचान चिन्ह वाला) और निराकार (बिना किसी आकार का) है और यह 'तवाहिद' का सबसे उच्च स्वरूप है।

यही नहीं, वे यह भी कहते हैं कि कुरआन के अनुसार अल्लाह ने अपने पैगम्बर दुनिया के सब देशों में भेजे हैं तो अल्लाह भारत को कैसे भूल सकते हैं। अल्लाह ने भारत में भी अपने पैगम्बर भेजे होंगे और हो सकता है कि राम और कृष्ण अल्लाह के पैगम्बर हों। अन्य कई सूफी संतों का भी यह मत है कि अल्लाह ने भारत में भी अपने पैगम्बर भेजे होंगे। मुसलमान मानते हैं कि अल्लाह ने कुल मिलाकर एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर भेजे हैं और कुरआन में तो सभी पैगम्बरों के नाम तक नहीं है।

इसका शेष भाग अगले अंक में प्रकाशित होगा

'दुनियावी इस्लाम'

अल्लाह तआला की तरफ से भिजवाए गए नबी और रसूल तब्लीगे दीन, फलसफा और मुन्तिक की दलील से नहीं करते, वह लोग उलेमा की तरह लोगों से बहसो मुबहिसा नहीं करते, वह लोग रूहानी तरीकों से लोगों के दिलों पर असर अन्दाज़ होते है। वह लोग आपने अमाल के ज़रिए अवाम के दिलों को फतह करते है, उनकी बातों को समझने के लिए किसी बड़े इल्मी दिमाग और आलिम की ज़रूरत नहीं होती ।

उनकी तब्लीग का तरीका बहुत ही आसान और सीधा होता है, जिसे एक मामूली दिमाग का, छोटे से छोटा इन्सान और एक बहुत आलिम शख्स का दिमाग दोनों बहुत आसानी से समझ लेते हैं, उनका तरका फितरी होता है। जबकि आलिम बड़ी बड़ी दलीले और मनतिक को भारी भरकम अल्फाज़ की शक्ल में ढ़ाल कर आसान मसाईल को भी मुश्किल और पैचीदा बना देते हैं, जिसे लोग बिल्कुल नहीं समझ पाते और तावील और हकीकमत की आड़ में उलमा सीधे साधे अवाम को बेवकूफ बना कर अपने हलवे मानडें का इन्तिक़ाम करते रहते है।

नबियों और रसूलों का काम लोगों और उलेमा दोनों को सरल और आसान तरीके से अल्लाह की तरफ शगिब करना होता है, जबकि उल्मा का काम सरल और आसान तरीके से छोड़ कर तावील और हकीकत की झूठी दलीलों में सीधे साधे लोगों को कियास और तखयुल के जाल में उलझा कर और बेवकूफ बना कर अल्लाह की राह से भटकाना होता है और इस तरह खुद के लिए दुनियादारी और अय्याशपरस्ती का सामान और ज़रिया मुहैय्या कराना होता है, कोई खलीफा बन बैठता है। कोई इमाम बन जाता है, कोई इमाम का दाई और कोई दाई का मोतकिद और मुरीद बन कर लोगों को लूट खसोट करता है और इन डाकूओं की टोली में कुछ अवामी लुटेरे शेख बन कर, कुछ आमिल बन कर, और कुछ मुल्ला बन कर आवाम को लुटना शुरू कर देते हैं और ये डाकूओं की टोली अवाम की दौलत पर अपने अय्याशी के महल तामीर करती है। ऐसी झूठी शान और शौकत के लिए अपने अज़ीज़ो के मुर्दों को दफ्न कर के उन के बड़े बड़े मज़ार बनवा कर उनकी फेज़ी और झूठी करामतों की अफवाहें तैयार करती है, उनके मज़ारों पर मकबरे तामीर करके लोगों को बेवकूफ बना कर मुर्दों की मिन्नतों और फेज़ी मोजज़ो की कहानियाँ बयान करके मज़ारों को तिज़ारत गाह बना कर करोड़ों रूपया जाहिल और बेवकूफ लोगों से वसुल करते रहते हैं और इस तरह बिना किसी मेहनत और मशक्कत के ऐश और आराम की ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़रिया फराहम कर लेते है।

हुसैन उदयपुरी

If Coimbatore can do it, so can others. Wake up!

In 1992 there arose a rift between the Jamaat in Coimbatore and a majority of mumineen regarding the functioning of the Qaradan Hasana. The mumineen formed a parallel Qaradan Hasana and named it Al Ameen Merchants Welfare Association. This society helped its members in getting the refund of whatever deposits they had in the Jamaat-run Qaradan Hasana called Taheri Qaradan Hasana. This society functioned excellently till 1996 catering to the financial needs of its members.

In 1996 Syedna Saheb graced Coimbatore to inaugurate the masjid and during that visit this society was ordered to be closed as it was functioning without 'raza'. Attempts were made to talk it out with various Shehzadas and other Sheikhs accompanying Syedna Saheb but in vain. Syedna Saheb left Coimbatore with Al Ameen closed.

The members got together and decided that come what may they would not join Taheri Qaradan. Attempts to get raza continued and a point came where the members sent a fax to the vazarat that any more delay and they would restart the Qaradan without raza. They got a new name and raza and today Qutbi Qaradan is thriving and prospering and so are its members.

Here the sabeels are very reasonable and cannot be arbitrarily increased. Wajebaat is collected without coercion and no money is collected for Masallah space.

- Mutmaeen

कुछ कीजिये

ये मकाँ, ये ऐशो इशरत, ठीक है,
आख़िरत के वास्ते कुछ कीजिये।
ठीक है इश्क़ो मुहब्बत, ठीक है।
आख़िरत के वास्ते कुछ कीजिये।
धोला धोला पैरहन अच्छा लगा,
ख़ुश्बुओं से तर बदन अच्छा लगा,
हार सीने पे, चमन अच्छा लगा,
बोलते लब पे सुखन, अच्छा लगा।
ये बुज़ुर्गी और शोहर ठीक है।
आख़िरत के वास्ते कुछ कीजिये।
हम बुज़ुर्गों की हैं करते बात भी।
है इबादत में गुज़रती रात भी।
कुछ फ़िदा होने के है, जज़्बात भी।
और उठाते हैं दुआ को हाथ भी।
दिल से हैं सब को अक़ीदत ठीक है।
आख़िरत के वास्ते कुछ कीजिये।
चीन और जापान जाओ शौक़ से
ख़ूब दौलत भी कमाओ, शौक़ से।
ऐश करके मुस्कुराओं शौक़ से।
आख़िरत के वास्ते कुछ कीजिये।

एम.के. शेख

Dr Asghar Ali Engineer at climate change meet in Bangkok

AMAN (Asian Muslim Action Network) organized a three-day Interfaith Consultation on "Climate Change in Bangkok from October 1-3, 2009 at which Dr Asghar Ali Engineer, chairman AMAN, chaired the inaugural meeting and spoke on climate warning from Qur'anic perspective. He based his views on the opening chapters of the Holy Qur'an. The Archbishop of Sweden, Anders Wejryd, spoke from a Christian perspective.

Experts on climate change from 16 Asian countries and belonging to different faiths participated in this consultation. There were about 60 participants from Japan, Cambodia, the Philippines, Malaysia, Indonesia, Iran, Jordan, India, Thailand, Bangladesh, Burma, Singapore and some other countries.

AMAN has regularly been organising workshops, consultations and seminars on various social, political, human and women's rights issues.

Haj to become pilgrimage for the elite

The pilgrimage to Mecca has always involved hardship and sacrifice, whether months spent traveling on foot through barren valleys and sleeping in the open with no shelter from the elements or stripping oneself of earthly trappings. But help is at hand for the pilgrim who cannot bear to be without comfort while executing the fifth pillar of Islam.

Raffles, which gave thirsty wanderers the Singapore Sling, is opening a luxury hotel in Mecca offering pilgrims a coffee sommelier, a chocolate room where chefs will prepare bespoke pralines and truffles, and a 24-hour butler service. Undeterred by restrictions on beautifying oneself during the Haj, the hotel will also have gyms, beauty parlours, grooming salons and a spa.

There are strict rules regarding personal hygiene and behaviour during the Haj, and forbidden activities include sex, the cutting of hair and nails and the trimming of beards. These bars are lifted once certain rituals are complete, but Muslims are generally expected to forget worldly thoughts and activities and focus on the divine.

Mohammed Arkobi, the general manager of the new hotel, did not explain how a chocolate room and spa would help pilgrims achieve spiritual fulfilment. Nor was he able to comment on how the amenities complied with the ethos of the Haj, which is about simplicity and humility.

But he did say that the "comprehensive range of services" were designed to meet the needs of the "discerning" travellers they were targeting.

Arkobi said the hotel was a three-minute walk away from the Grand Mosque, the Masjid al-Haram, and that a "spacious outdoor dining terrace" would provide direct views of it.

Raffles Mecca is due to open in April 2010.

- Gulam Mohammad

HC admits plea on renaming Matheran railway station after founder Sir Adamji Peerbhoy

A century ago, Sir Adamjee Peerbhoy set up a railway link between Neral and Matheran in the Sahyadri ranges to provide tourists a joy ride in toy trains but little did he realise that his services would be forgotten in the years to come.

Today, 102 years after Peerbhoy's gift to the nation in the form of toy trains and a well-planned rail network on this hill, his family continues to fight for the honour which he deserves - renaming Matheran Railway station as 'Sir Adamjee Peerbhoy Railway station'.

The Bombay High Court recently admitted a petition seeking renaming of the Matheran Railway station after its founder. Justice S B Mhase and Justice R M Sawant have kept the matter for hearing in December.

The Court's decision to admit the petition comes on the eve of visit of a UNESCO team here next week to consider granting World Heritage status to the century-old Railway which has become a tourist delight.

As the union government turned down the proposal of the Maharashtra Government to rename Matheran Railway after its founding father, Ali Akbar Peerbhoy, grandson of Sir Peerbhoy, moved the High Court seeking to get this honour.

Matheran, a popular hill resort near Mumbai, was gifted a rail link in 1907 during the British regime at a cost of Rs 16 lakh, a princely sum those days, by Sir Peerbhoy whose family has been running from pillar to post to get recognition for his services to the nation.

Sir Peerbhoy was a freedom fighter and closely associated with Bal Gangadhar Tilak and Annie Besant. He was conferred Knighthood by the British King on January 1, 1907. He was appointed as the Sheriff of Bombay for a year in 1987.

All news courtesy Bohra Chronicle

Editorial Board :

Editor : Razia Sanwari; Editorial Assistants: Tauseef Hussain Mandiwala, Shabana Meyaji

Published by : Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

Tel: 91-294-2521719; Fax: 91-294-2524886; email: journal@dawoodi-bohras.com

Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur - 313001 Ph. : 91-294-2523830

POSTAL ADDRESS

For more news on Progressive Dawoodi Bohras from over the world, visit http://dawoodi-bohras.com/

Disclaimer : The views published in this publication are solely the contributors'. The Editor and editorial board holds no responsibilities for it.